Rest in Peace

Dr. MVS Prasad, Assistant professor Department of Curriculum Studies. ***A life so alive cut short...***

We lost our dear colleague and friend on 11th February 2019. We participated with him in many projects and programmes specifically in developing the book *'veergatha'*. May his soul rest in peace.

Krishna Sobti, *her's was literary jouney... from the core of human life...*

A renowned Hindi-language fiction writer and essayist passed away on 25 January 2019.

Krishna Sobti won the Shitya Akademi Award in 1980 for her novel Zindaginama. She was also awarded Sahitya Akademi Fellowship. In 2017 she received the Jnanpith Award for her contribution to India Literature.

> When Krishna Sobti was writing her novel *Zindaginama* (1979), she approached a bank officer for a loan. "I'm writing a very important book," she told him, "and I need a loan so I won't have to work." The bank officer was pleasant, she reported, but said he must apologize, because he simply wasn't supposed to give out loans for the writing of very important books. The purchase of livestock, or seeds, perhaps, but not literary production. Undeterred, Sobti went on to finish the book and win the Sahitya Akademi award for it in 1980.

हमारी पुस्तक में-

2 बचपन

मैं तुम्हें अपने बचपन की ओर ले जाऊँगी।

मैं तुमसे कुछ इतनी बड़ी हूँ कि तुम्हारी दादी भी हो सकती हूँ, तुम्हारी नानी भी। बड़ी बुआ भी–बड़ी मौसी भी। परिवार में मुझे सभी लोग जीजी कहकर ही पुकारते हैं।

हाँ, मैं इन दिनों कुछ बड़ा–बड़ा यानी उम्र में सयाना महसूस करने लगी हूँ। शायद इसलिए कि पिछली शताब्दी में पैदा हुई थी। मेरे पहनने–ओढ़ने में भी काफ़ी बदलाव आए हैं। पहले मैं रंग–बिरंगे कपड़े पहनती रही हूँ। नीला–जामुनी–ग्रे–काला–चॉकलेटी। अब मन कुछ ऐसा करता है कि सफ़ेद पहनो। गहरे नहीं, हलके रंग। मैंने पिछले दशकों में तरह–तरह की पोशाकें पहनी हैं। पहले फ्रॉक, फिर निकर–चॉकर, स्कर्ट, लहँगे, गरारे और अब चूड़ीदार और घेरदार कुर्ते।

बचपन के कुछ फ्रॉक तो मुझे अब तक याद हैं।

हलकी नीली और पीली धारीवाला फ्रॉक। गोल कॉलर और बाज़ू पर भी गोल कफ़।

एक हलके गुलाबी रंग का बारीक चुन्नटोंवाला घेरदार फ्रॉक। नीचे गुलाबी रंग की फ़्रिल।

उन दिनों फ्रॉक के ऊपर की जेब में रूमाल और बालों में इतराते रंग–बिरंगे रिबन का चलन था।

लेमन कलर का बड़े प्लेटोंवाला गर्म फ्रॉक जिसके नीचे फ़र टँकी थी।

दो ड्यूनिक भी याद हैं। एक चॉकलेट रंग का और अंदर की कोटी प्याजी। दूसरा ग्रे और उसके साथ सफ़ेद कोटी।

2018-19

वसंत, भाग-1, कक्षा-6

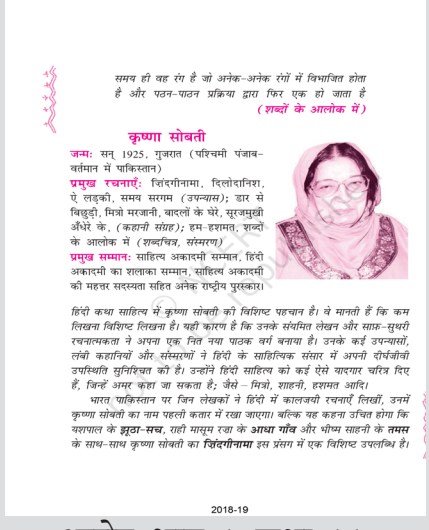

समय ही वह रंग है जो अनेक–अनेक रंगों में विभाजित होता है और पतन–पाटन प्रक्रिया द्वारा फिर एक हो जाता है

(शब्दों के आलोक में)

कृष्णा सोबती

जन्म: सन् 1925, गुजरात (पश्चिमी पंजाब–वर्तमान में पाकिस्तान)

प्रमुख रचनाएँ: ज़िंदगीनामा, दिलोदानिश, ऐ लड़की, समय सरगम *(उपन्यास)*; डार से बिछुड़ी, मित्रो मरजानी, बादलों के घेरे, सूरजमुखी अँधेरे के, *(कहानी संग्रह)*; हम–हशमत, शब्दों के आलोक में *(शब्दचित्र, संस्मरण)*

प्रमुख सम्मान: साहित्य अकादमी सम्मान, हिंदी अकादमी का शलाका सम्मान, साहित्य अकादमी की महत्तर सदस्यता सहित अनेक राष्ट्रीय पुरस्कार।

हिंदी कथा साहित्य में कृष्णा सोबती की विशिष्ट पहचान है। वे मानती हैं कि कम लिखना विशिष्ट लिखना है। यही कारण है कि उनके संयमित लेखन और साफ़–सुथरी रचनात्मकता ने अपना एक नित नया पाठक वर्ग बनाया है। उनके कई उपन्यासों, लंबी कहानियों और संस्मरणों ने हिंदी के साहित्यिक संसार में अपनी दीर्घजीवी उपस्थिति सुनिश्चित की है। उन्होंने हिंदी साहित्य को कई ऐसे यादगार चरित्र दिए हैं, जिन्हें अमर कहा जा सकता है; जैसे – मित्रो, शाहनी, हशमत आदि।

भारत पाकिस्तान पर जिन लेखकों ने हिंदी में कालजयी रचनाएँ लिखीं, उनमें कृष्णा सोबती का नाम पहली कतार में रखा जाएगा। बल्कि यह कहना उचित होगा कि यशपाल के ***झूठा–सच****, राही मासूम रज़ा के* ***आधा गाँव*** *और भीष्म साहनी के* ***तमस*** *के साथ–साथ कृष्णा सोबती का* ***ज़िंदगीनामा*** *इस प्रसंग में एक विशिष्ट उपलब्धि है।*

2018-19

आरोह, भाग-1, कक्षा-11

विष्णु खरे (1940-2018)

समकालीन हिंदी कविता और आलोचना में विष्णु खरे एक विशिष्ट हस्ताक्षर हैं। उन्होंने हिंदी जगत को अत्यंत गहरी विचारपरक कविताएँ दी हैं, तो साथ ही बेबाक आलोचनात्मक लेख भी दिए हैं। विश्व साहित्य और सिनेमा का गहन अध्ययन उनके रचनात्मक और आलोचनात्मक लेखन में पूरी रंगत के साथ दिखाई पड़ता है।

विष्णु खरे का जन्म सन् 1940, छिंदवाड़ा (मध्य प्रदेश) में हुआ। उनकी प्रमुख रचनाएँ: एक गैर रूमानी समय में, खुद अपनी आँख से, सबकी आवाज़ के पर्दे में, पिछला बाकी (कविता-संग्रह), आलोचना की पहली किताब (आलोचना), सिनेमा पढ़ने के तरीके (सिने आलोचना) आदि हैं। **प्रमुख पुरस्कार:** रघुवीर सहाय सम्मान, हिंदी अकादमी (दिल्ली) का सम्मान, शिखर सम्मान, मैथिलीशरण गुप्त सम्मान, फिनलैंड का राष्ट्रीय सम्मान- नाइट ऑफ़ दि ऑर्डर ऑफ़ दि व्हाइट रोज़।

श्री विष्णु खरे जी का निधन 19 सितंबर 2018 को हुआ।

हमारी पुस्तक में-

चार्ली चैप्लिन यानी हम सब

यदि यह वर्ष चैप्लिन की जन्मशती* का न होता तो भी चैप्लिन के जीवन का एक महत्त्वपूर्ण वर्ष होता क्योंकि आज उनकी पहली फ़िल्म 'मेकिंग ए लिविंग' के 75वर्ष पूरे होते हैं। पौन शताब्दी से चैप्लिन की कला दुनिया के सामने है और पाँच पीढ़ियों को मुग्ध कर चुकी है। समय, भूगोल और संस्कृतियों की सीमाओं से खिलवाड़ करता हुआ चार्ली आज भारत के लाखों बच्चों को हँसा रहा है जो उसे अपने बुज़ुर्गों तक याद रखेंगे। पश्चिम में तो बार-बार चार्ली का पुनर्जीवन होता ही है, विकासशील दुनिया में जैसे-जैसे टेलीविज़न और वीडियो का प्रसार हो रहा है, एक बहुत बड़ा दर्शक वर्ग नए सिरे से चार्ली को घड़ी 'सुधारते' या जूते 'खाने' की कोशिश करते हुए देख रहा है। चैप्लिन की ऐसी कुछ फ़िल्में या इस्तेमाल न की गई रीलें भी मिली हैं जिनके बारे में कोई जानता न था। अभी चैप्लिन पर करीब 50 वर्षों तक काफ़ी कुछ कहा जाएगा।

1936 में बनी **मॉडर्न टाइम्स** फ़िल्म का एक दृश्य

*16 अप्रैल 1989 को इनके जन्म के सौ साल पूरे हो गए।

आरोह, भाग-2, कक्षा-12